|  |
| --- |
| 18. Februar 2024 |
| **01. Fastensonntag B**  |
| Erste Lesung: Gen 9,8-15; Zweite Lesung: 1 Petr 3,18-22; Evangelium: Mk 1,12-15 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 272 | Zeige uns, Herr, deine Wege |
|  | GL 266, 1+2 | Bekehre uns, vergib die Sünde |
|  | GL 427, 1 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  | GL 638, 1-4 | Nun ist sie da, die rechte Zeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 4  | Herr Jesus, auferstanden |
|  | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 25,4-9 |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 623, 2 | Um deines Namens willen |
|  | GL 60, 1 | Der Herr hat uns befreit |
|  | (Psalmen)-Lied: |  |
|  | GL 142, 1 | Herr, zeige uns die Wege dein |
|  | GL 791, 1!+2 | Vertraut den neuen Wegen |
|  |  |
| Ruf vor dem Evangelium: | GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 |
|  | Vers: |  |
|  | *Nicht nur vom Brot lebt der Mensch,* |
|  | *sondern von jedem Wort aus Gottes Mund* |
|  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 187, 1+2 | Wir weihn der Erde Gaben |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 747 | Gottes Lamm |
|  | GL 421, 2+3 | Du wirst zur rechten Zeit |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 384, 2! | Hoch sei gepriesen |
|  | GL 209 | Du teilst es aus |
|  | GL 269 | Du Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 428, 1+5 | Herr, dir ist nichts verborgen |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 786, 1-3! | Zieh an die Macht |
|  |  |  |